

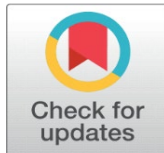
BURDEN OF THE PAST, J. KRISHNAMURTHY

बीते हुए कल का, बोझ, जे० कृष्णमूर्ति

Khushboo Singh¹, Ritu Chandra²

¹ Research Scholar, Institute of Education & Research, Shriram Swarup Memorial University, Barabanki, U.P., PIN-225003, India

² Professor, Institute of Education & Research, Shriram Swarup Memorial University, Barabanki, U.P., PIN-225003, India



DOI

10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.6394

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



ABSTRACT

English: Generally, the way we live our lives, we rarely get solitude. Even if we are alone, then many kinds of influences, experiences, knowledge, and memories, worries, struggles, and sorrows surround us from all sides. Due to these things, our mind becomes more and more dull, stupid and insensitive. It goes on living the same routine life every day. So, are we ever able to be alone in the true sense? Or are we always carrying the burden of the past with us? An attempt has been made to talk about these questions in this article, in which the main points taken are, calm mind, thoughtless state and expansion and dispersion, discipline, silence.

Hindi: सामान्यतः जिस ढंग का जीवन हम बिताते हैं उसमें शायद ही कभी एकांत मिलता है। अगर कभी हम एकांत में होते भी हैं, तो अनेक तरह के प्रभाव, अनुभव, ज्ञान, तथा स्मृतियाँ, चिंताएँ, संघर्ष, और दुःख हमें चारों ओर से घेरे रहते हैं। इन्हीं चीजों के कारण हमारा मन अधिक-से-अधिक मंद, मूढ़ और असंवेदनशील हो जाता है। यह हर रोज एक ही ढर्रे के बँधे - बँधाये जीवन को जिये चला जाता है। तो क्या हम सही अर्थों में कभी एकाकी हो पाते हैं? या हम सदा अपने साथ बीते हुए कल के बोझ को ही ढोते चल रहे हैं? बस इन्हीं सब प्रश्नों के बारे में इस लेख में बात करने का प्रयास किया गया है, जिसमें मुख्य बिन्दु लिया गया है, शांतमन, निर्विचार अवस्था एवं विस्तार और फैलाव, अनुशासन, मौन।

Keywords: Burden of The Past, Calm Mind-Dialogue, Discipline, Silence, Truth and Reality बीते हुए कल का बोझ, शांत मन-संवाद, अनुशासन, मौन, सत्य और वास्तविकता

1. प्रस्तावना

दो संन्यासियों के संबंध में एक रोचक और अर्थपूर्ण कहानी है। एक बार दो संन्यासी किसी एक गाँव से दूसरे गाँव को चले जा रहे थे। रास्ते में अचानक उनकी नजर एक युवा लड़की पर पड़ी, जो नदी के किनारे बैठी रो रही थी। उनमें से एक संन्यासी उस लड़की के पास जाकर बोला, बहन, तुम किसलिए रो रही हो?" उस लड़की ने कहा, "नदी के उस पार जो घर तुम देख रहे हो, वहीं मैं रहती हूँ। आज सवेरे जब मैं इस पार आयी तो बिना किसी कठिनाई के मैं पैदल चलकर नदी पार कर गयी, किंतु अचानक नदी में पानी बढ़ गया है, इसलिए मैं अब घर नहीं लौट सकती। कोई नाव भी नहीं है।" उस संन्यासी ने कहा, "यह कोई बड़ी समस्या नहीं है, मैं तुम्हारी सहायता करता हूँ।" और यह कहकर उसने लड़की को अपने कंधे पर उठा लिया और उस पार छोड़ आया। लौटकर वह पुनः अपने संन्यासी मित्र के साथ यात्रा पर चल पड़ा। कोई दो घंटे बाद दूसरा संन्यासी पहले संन्यासी से बोला, "भाई, हमलोगों ने ब्रत लिया था कि कभी किसी औरत को नहीं छुएँगे। इसलिए तुमने आज जो कुछ किया है वह एक घोर पाप है। क्या तुम्हें उस औरत को छूने पर क्या तुम सुख, रोमांच और एक गहरी उत्तेजना की अनुभूति नहीं हुई?" दूसरे संन्यासी ने उत्तर दिया, "मैं तो उस औरत को दो घंटे पीछे छोड़ आया, क्या तुम अभी तक ढो रहे हो?"

2. कृष्णमूर्ति जी के अनुसार

और वहीं हम सभी कर रहे हैं। जो बीत गया उसके बोझ को हम ढोते चल रहे हैं। उसके प्रति हम कभी नहीं मरते। उसे हम अपने से कभी अलग उसे नहीं करते। तो सही अर्थों में हमारे जीवन में एकांत तभी होता है जब हम हर समस्या को अपना पूरा ध्यान देते हैं और उसे तत्काल हल कर लेते हैं, अगले दिन या अगले मिनट तक ढोते नहीं चलते। तब हम भले ही लोगों से भरे हुए एक घर में रह रहे हों या खचाखच भरे बस में सफर कर रहे हों- हम सदा एकांत में ही होते हैं। और इस एकांत का अर्थ है - एक निष्कलुष और ताजा मन।

3. शांतमन

आंतरिक रूप से एकांत और अवकाश (विस्तार और फैलाव) को पाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे ऐसा बोध होता है कि आप कुछ करने के लिए, होने-जाने के लिए बिलकुल स्वतंत्र हैं- मानो आप उन्मुक्त आकाश में उड़ान भर रहे हों। इस विस्तार और फैलाव अर्थात् अवकाश में ही अच्छाई का जन्म होता है, ठीक वैसे ही जैसे केवल मुक्ति और स्वतंत्रता में सद्गुण खिल सकता है। हमारे पास राजनीतिक स्वतंत्रता भले ही हो, लेकिन हम आंतरिक रूप से स्वतंत्र नहीं हैं और इसीलिए हमारे भीतर विस्तार और फैलाव नहीं है। अपने भीतर इस विराट् विस्तार और फैलाव के बिना कोई भी सार्थक सद्गुण और गुणवत्ता न विकसित हो सकती है और न कार्य कर सकती है। विस्तार और मौन आवश्यक हैं क्योंकि जब मन एकाकी, अप्रभावित, अप्रशिक्षित होता है अर्थात् जब वह असंख्य प्रकार के अनुभवों द्वारा बँधा नहीं होता, तभी वह एक ऐसी चीज का साक्षात्कार कर सकता है जो समग्रतः नयी है।

आप इसे आसानी से देख सकते हैं कि हमारे मन के अन्दर, अर्थात् हमारी दृष्टि और हमारे विचार में स्पष्टता तभी संभव है जब हमारा मन शांत और मौन हो। मन की इसी अवस्था को पाने के लिए पूर्वी देशों में लोग ध्यान का इतना प्रयोग करते हैं। वे प्रयास करते हैं कि विचार को किसी तरह नियंत्रित कर लें - वैसे ही जैसे कुछ लोग मंत्रों के बार - बार जाप द्वारा मन को शांत करने की कोशिश करते हैं, इस आशा में कि शांत मन की अवस्था में वे अपनी समस्याओं को समझ सकेंगे। लेकिन जब तक व्यक्ति पहले ध्यान की नींव नहीं रखता अर्थात् जब तक वह भय, दुःख, चिंता और अपने ही बनाये फंदों और जालों से मुक्त नहीं हो जाता तब तक मन भला शांत कैसे हो सकता है! लेकिन यह बात किसी तक पहुँचा पाना कठिन -से - कठिन चीज है।

4. (निर्विचार अवस्था) एवं अवकाश (विस्तार और फैलाव)

चेतना की सीमाओं के पार जाने के लिए मौन (निर्विचार अवस्था) एवं अवकाश (विस्तार और फैलाव) आवश्यक है। लेकिन जो मन अपने हित की चिंता में निरंतर सक्रिय है वह भला शांत कैसे हो सकता है! आप मन को अनुशासित और नियंत्रित कर सकते हैं, एक निश्चित साँचे में ढाल सकते हैं, लेकिन मन को इस तरह यातना देकर और सताकर आप शांत नहीं कर सकते। इससे तो मन केवल मंद और मूढ़ होता है। अगर मन को शांत करने का आपने एक संकल्प या आदर्श बना रखा है, तो इसका कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि आप मन पर जितना ही जोर-जबरदस्ती करेंगे उतना ही वह संकीर्ण और जड़वत् होता जायेगा। मन पर किसी भी तरह का नियंत्रण या दमन केवल संघर्ष पैदा करता है। इसलिए नियंत्रण और बाहरी अनुशासन सही मार्ग नहीं है। लेकिन जो जीवन गहरे और वास्तविक अर्थों में अनुशासित नहीं है उसका भी कोई मूल्य नहीं है।

5. अनुशासन

हमारा परिवार, हमारा दुःख और कष्ट, हमारा अनुभव, सैद्धांतिक या व्यावहारिक ढाँचों में हमारी आस्था, समाज की माँगें- ये सभी चीजें हमारे जीवन को बाहरी रूप से अनुशासित करने के लिए दबाव डालती हैं। अनुशासन का यह रूप सबसे घातक है। अनुशासन का सहज रूप वह है जिसमें नियंत्रण, दमन और किसी तरह का भय बिलकुल ही न हो। लेकिन यह अनुशासन किस तरह घटित हो सकता है? और ऐसा भी नहीं है कि अनुशासन पहले और मुक्ति बाद में। वस्तुतः मुक्ति प्रारंभ में ही है, अंत में नहीं। इस मुक्ति को समझना - मुक्ति यानी अनुशासनबद्धता से मुक्ति - ही अनुशासन है। सीखने की क्रिया ही अनुशासन है। और इस सीखने की क्रिया में हर चीज साफ और स्पष्ट हो जाती है। नियंत्रण, दमन, भोग और आसक्ति के पूरे स्वरूप और पूरे ढाँचे को समझने के लिए होश और ध्यान आवश्यक है। इसका अध्ययन करने के लिए आपको अपने ऊपर अनुशासन नहीं थोपना पड़ेगा, बल्कि अध्ययन करने की क्रिया स्वतः उस सहज अनुशासन को जन्म देती है जिसमें दमन मौजूद नहीं होता।

मौन क्या है?

मौन क्या है? शोर के बंद होने पर या विचार के ठहर जाने पर जो एक मौन होता है, हम केवल उसे ही जानते हैं - लेकिन वह मौन नहीं है। मौन तो कुछ ऐसा है जो सर्वथा भिन्न है- जैसे सौंदर्य, जैसे प्रेम। और यह मौन एक शांत मन की उपज नहीं है। यह मौन मस्तिष्क कोशिकाओं की भी देन नहीं है जो सारी बातों को सुनने-समझने के बाद स्वयं से कहती हैं, "भगवान् के लिए शांत हो जाओ!" क्योंकि तब मस्तिष्क की कोशिकाएँ मौन साध लेती हैं

किंतु वह वास्तविक मौन नहीं है। न ही यह मौन उस सावधानी और चौकसी का नतीजा है जिसमें द्रष्टा दृश्य हो जाता है। द्रष्टा के दृश्य हो जाने पर संघर्ष यद्यपि विदा हो जाता है, लेकिन यह मौन की अवस्था नहीं है।

6. निष्कर्ष

इस तरह हम देखते हैं कि नियंत्रण द्वारा मन का शांत और चुप होना संभव नहीं है। न ही जब मन किसी वस्तु पर एकाग्र होता है तो यह वस्तुतः शांत होता है, क्योंकि तब वह वस्तु मन को अपने में उलझाये रखती है। यह इसी तरह है जैसे अगर आप किसी बच्चे को एक मजेदार खिलौना दे दीजिए, तो वह उसमें उलझकर बिलकुल शांत हो जाता है। अगर आप वह खिलौना वहाँ से हटा लीजिये, तो वह पुनः अपनी शरारत पर उतर आता है। हम सब किसी-न-किसी खिलौने में उलझे हुए हैं। कुछ लोगों के लिए यह खिलौना उनका पूजा-पाठ, मंत्र-जप इत्यादि है। या अगर कोई व्यक्ति किसी खास ढंग के कार्य और गतिविधि, जैसे साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक या वैज्ञानिक, के प्रति समर्पित है, तो यही उसका खिलौना बन जाता है। जो व्यक्ति खिलौनों में उलझकर शांत हो गया है वह वस्तुतः शांत नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कृष्णमूर्ति जे. - ज्ञात से मुक्ति संस्करण 2012 , वाराणसी , कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया ।

Sharma Prantika (2014), j.krishnamurti's nation of freedom from the no : an observation, Guwahati 781026

Available online at <http://www.iasir.net>

Rao.o.R. (2024), journal of the krishnamurti school's

Islam Zamirul MD (2021), jiddu krishnamurti: A great teacher of humanistic education, URL:www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd38588.pdf

Gupta.K.N. (2022), जे. कृष्णमूर्ति के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन ISSN-2320-2882, www.ijcrt.org.

कृष्णमूर्ति जे., संस्करण (2022), दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृष्ठ- 1819 o 20 ISBN- 9788170286691